Roll No. .....
Signature of Invigilator .....

Paper Code
MD-401

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

Examination June – 2022

M.A. Darshan, Semester : Fourth
Darshan ; Paper : First

सांख्य–योग–4

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड–क
(दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. बाह्य पदार्थ को चित्त की परिकल्पना मानना क्यों न्यायविरूद्ध है, योगदर्शनानुसार वर्णन करें।
2. धर्ममेघ समाधि की परिभाषा और फल का वर्णन व्यासभाष्यानुसार करें।
3. सांख्याभिमत ईश्वर के अधिष्ठातृत्व को पक्ष–प्रतिपक्ष के वर्णन पूर्वक सिद्ध करें।
4. आत्मा के अस्तित्व के उपपादन में महर्षि कपिल की युक्तियों की सार्थकता प्रतिपादन करें।
5. 'क्रम' का स्वरूप प्रमाणपूर्वक बताते हुए व्यासभाष्यानुसार विस्तृत विवरण प्रस्तुत करें।

खण्ड–ख
(लघु–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5×5=25)**

6. सांख्यदर्शनानुसार मन व्यापक है या एकदेशी, संक्षिप्त व्याख्या करें।
7. योगदर्शनानुसार सिद्धियाँ कितने प्रकार से उपलब्ध हो सकती हैं?
8. कैवल्य के स्वरूप का निरूपण करें।
9. कायेन्द्रियों की प्रकृति के आपूरण की व्याख्या व्यासभाष्यानुसार करें।
10. सांख्यानुसार वेद पौरुषेय है अथवा अपौरुषेय, सप्रमाण लिखें।
11. "हेतुफलाश्रयालम्बनै
12. : संगृहीतत्वादेषामभावेतदभाव" इस सूत्र की भाष्यानुसर व्याख्या करें।
13. सांख्यानुसार संक्षेप में बतायें कि सुषुप्ति अवस्था में अर्थज्ञान क्यों नहीं होता?

----------x----------